पृ. 135--143

उपसंहार

उ प सं हा र

हिन्दी के प्रखर समीक्षक और प्रगतिचेता उपन्यासकार डॉ. देवेश ठाकुर के व्यक्तित्व और कृतित्व के वस्तुपरक आकलन का प्रयास मैंने प्रथम अध्याय में किया है। व्यक्तित्व की पहचान के लिए प्रारम्भ में देवेशजी का प्रामाणिक जीवन-परिचय प्रस्तुत किया है। देवेशजी का समग्र जीवन आर्थिक कठिनाइयों के विरुद्ध संघर्ष करने में बीत गया है। संघर्ष में भी वे दृढ और आशावादी रहे हैं। पारिवारिक दायित्व का बोध देवेशजी में है फिर भी परिवार से सम्बन्ध विच्छेद करने का उनका निर्णय "स्व" की रक्षा के प्रयास स्वरूप मानना चाहिए। वे अपने जीवन में जातीयता और साम्प्रदायिकता के विरोध में रहे हैं। विवाह तथा संतान को लेकर उन्हें अपने जीवन में पूर्ण रूप से संतोष है। उनका व्यक्तित्व संपन्न तथा आदर्श है। वे स्पष्ट, मुखर तथा हँसमुख है। उनके व्यक्तित्व के अनुशीलन से हमें जीवन के संघर्ष-पथ पर ईमानदारी के साथ अथक परिश्रम करने की प्रेरणा मिलती है। देवेशजी की सफलता का रहस्य उनकी ईमानदारी और परिश्रम है। प्रतिभा की अपेक्षा अभ्यास को आप अधिक महत्व देते हैं। जिन्दगी के विविध मोडों पर संघर्ष के समय उनमें जीजीविषा वृत्ति उन्हें क्रियाशील बनाती रही।

हिन्दी में देवेशजी जैसे कम लेखक हुए हैं जिन्होंने समान रूप से समीक्षा और रचना दोनों का इतनी सार्थकता से निर्वाह किया हो और इतनी सफलता और स्वीकृति पायी हो। देवेशजी ने उपन्यास, कहानी, कविता, एकांकी, निबंध, शोध-ग्रंथ आदि सभी रचनाओं में संघर्षवादी तथा आस्थावादी स्वर ध्वनित किया है। उनकी रचनाओं में समाजोन्मुखी स्वस्थ जीवन-दृष्टि व्यक्त हुयी है।

देवेशजी के व्यक्तित्व का प्रतिबिम्ब "भ्रमभंग" उपन्यास में प्रतिबिम्बीत हो उठा है। "भ्रमभंग" में प्राध्यापक देवेशजी की आत्मा की आवाज है। उनकी जीवन संघर्ष का दस्तावेज है।

द्वितीय अध्याय में निष्कर्ष के रूप में कहा है कि "भ्रमभंग" उपन्यास की कथावस्तु एक सत्य जीवन चरित्र पर आधारित है। देवेशाजी ने अपने जीवन की वास्तविक घटनाओं तथा प्रत्यक्ष अनुभूतियों को "चन्दन नेगी" इस पात्र के माध्यम से चित्रित किया है। वस्तुत: देवेशाजी की भीतरी और बाहरी संघर्षों का दस्तावेज "भ्रमभंग" उपन्यास है। अत: कथावस्तु स्वाभाविक तथा रोचक बनी हुयी है।

"भ्रमभंग" उपन्यास में देवेशाजी ने आत्मकथा को औपन्यासिक रूप न देते हुए परोक्ष ढंग से अपने जीवन की संघर्ष कहानी कथावस्तु के रूप में प्रस्तुत की है। क्योंकि उनकी दृष्टि में ऐसा करने से रचना में व्यक्तिपरकता की गंध आने लगती है और उसका दायरा सीमित हो जाता है। इस व्यक्ति-परकता से बचने के लिए "भ्रमभंग" में काल्पनिक पात्र "चन्दन नेगी" की सृष्टि करके आत्मकथात्मक शैली में कथावस्तु को प्रस्तुत किया है। साथ ही देवेशाजी का जीवन संघर्ष वर्तमान समाजव्यवस्था में सार्वजनिन रूप धारण कर रहा है। अत: "भ्रमभंग" की कथावस्तु अब निम्नमध्यवर्गीय युवक की प्रातिनिधीक कथावस्तु बन गयी है। निष्कर्षत: चरित्र की कथा देवेशाजी की जीवन कहानी ही है।

कथावस्तु के माध्यम से देवेशाजी ने अपनी जीवनदृष्टि को व्यंजित किया है कि, वैयक्तिक तथा सामाजिक यातनाओं से मुक्ति पाने के लिए व्यक्ति को भ्रमों से मुक्त होना चाहिए और जीवन के यथार्थ-बोध का आकलन करना चाहिए। जीवनदृष्टि की इस अभिव्यक्ति के लिए कथाक्षेत्र में कुशलतापूर्वक प्रयोग किया है। उपन्यास का शीर्षक "भ्रमभंग" भी आकर्षक तथा सार्थक बन पडा है। तात्पर्य "भ्रमभंग" में भ्रमों के भंग होने की कहानी होते हुए भी इसमें मानवीय आस्था का स्वर है। उपन्यास की यही सबसे बडी उपलब्धि है।

"भ्रमभंग" उपन्यास के पात्र निम्नमध्यवर्गीय बुध्दिजीवी रहे हैं। नायक तथा प्रमुख पात्र चन्दन बम्बई के प्राइवेट कॉलेज में हिंदी का प्राध्यापक है।

उपन्यासकार स्वयं भी बम्बई के "रूइया" कॉलेज में हिंदी के प्राध्यापक रहे हैं। अत: शिक्षाक्षेत्र के परिवेश का यथार्थ तथा जीवन्त चित्रा प्रस्तुत करने में देवेशजी को अतीव सफलता मिली है। "भ्रमभंग" उपन्यास में प्राध्यापक चन्दन के जीवन-संघर्ष की कहानी चित्रित की है।

नायक चन्दन मध्यवर्गीय परिवेश की उपज है। पुरानी रुढियाँ, मान्यताएँ, आदर्शों आदि के बोझ को वह वहन करता रहता है। वह एक ऐसी विचित्रा मानसिकता में फँस जाता है कि "करूँ या न करूँ" की अवस्था में परिवार के प्रति अपने दायित्व को निभाता रहता है। मनोविश्लेषणात्मक शैली, हृदय शैली, चेतना-प्रवाह शैली से चन्दन के मानसिक व्दन्व्द का यथार्थ चित्राण करने में देवेशजी को अपूर्व सफलता मिली है।

उपन्यास का नायक चन्दन परम्परागत संस्कारों से मुक्ति पाने के लिए सतत संघर्ष करता हुआ चित्रित किया गया है। वह अभिजात संस्कारों को आधुनिक जीवन यथार्थ बोध को प्राप्त करने का प्रयास करता है। इस प्रयास में वह बाह्य तथा आंतरिक संघर्षों से जूझता रहता है। "भ्रमभंग" के नायक को आत्मसाक्षात्कार होते ही अर्थात् जीवन का यथार्थ बोध होते ही साहस के साथ झूठे आदर्शों के विरुध्द निर्णय लेकर वह पाठकों के सामने जीवनसिध्दान्त को रखाकर एक नयी जीवन दृष्टि प्रदान करता है।

"भ्रमभंग" का नायक अध्ययनशील तथा आदर्शवादी प्राध्यापक है। वह महत्वाकांक्षी, संघर्षशील, विचारशील, आस्थावादी, आत्मविश्वासी तथा साहसी निर्णय की क्षामता रखनेवाला युवक है। वह व्यवस्था के प्रति आक्रोश-विद्रोह प्रकट करनेवाला व्यक्ति भी है। वह बाहरी तौर पर समाज व्यवस्था परिवेश के विरोध में संघर्ष करता रहता है और उसे परिवार के भीतर भी अर्थ-केन्द्रित रिश्ते-नातों के विरुध्द संघर्ष करना पडता है।

इसप्रकार चन्दन का चरित्रा परिवारवालों की दुच्ची मानसिकता से टूटकर ममता की तलाश में भटकनेवाले सशक्त एवं जिन्दादिल प्रतिनिधी का चरित्रा बन गया है। चन्दन के चरित्रा की इन विशेषाताओं के उद्घाटन में देवेशजी को सफलता प्राप्त हुयी है।

निष्कर्षत: चन्दन का चरित्र चित्रण सफल बन गया है। देवेशजी की शैली में चरित्र चित्रण की अद्वितीय क्षमता है। चरित्र के बाह्य परिवेश के साथ भीतरी व्यक्तित्व के चित्रण में देवेशजी को सफलता मिली ह है। निम्नमध्यवर्ग का ओछेपन, दरिद्रता, स्वार्थ और घमंड के कई छोटे छोटे प्रसंगों से चन्दन का चरित्र मण्डित हुआ है। पारिवारिक रिश्तों, पुराने रिश्तों के फालतुपन, फालतु रिश्तों के प्रति भ्रम और मोह आदि का इतिवृत्त नायक चन्दन का चरित्र प्रस्तुत करता है।

अन्तत: चन्दन इसी निष्कर्ष पर पहुँचता है कि, मानवीय और सामाजिक रिश्ते ही सही है। समग्रत: यह कहा जा सकता है कि, देवेशजी चन्दन के माध्यम से एक इस्पाती चरित्र का सृजन करने में सफल हुए है। युवा पीढी के लिए प्रस्तुत चरित्र आदर्श तथा प्रेरणादायी है। अत: चरित्र चित्रण की यह देवेशजी की सबसे बडी उपलब्धि है।

"भ्रमभंग" में संवादों का सफल एवं सार्थक प्रयोग हुआ है। यह संवाद मुख्यत: वैयक्तिक जीवन से संबंधित गार्हस्थिक तथा तात्त्विक रचनावाले है। पात्रानुकूल संवादों की योजना करने में देवेशजी को सफलता मिली है।

"भ्रमभंग" उपन्यास में बम्बई महानगरीय जीवन के परिवेश का चित्रण है। अत: कुछ मात्रा में उसमें आँचलिकता आयी है। युगीन वातावरण के वर्णन के अंतर्गत निम्नमध्यवर्ग की सामाजिक, पारिवारिक तथा राजनैतिक चेतना का चित्रण "भ्रमभंग" में प्रस्तुत है। सामाजिक चेतना के अंतर्गत पारिवारीक विघटन, स्त्री-पुरूष यौन सम्बन्ध तथा युवावर्ग का असंतोष आदि का चित्रण "भ्रमभंग" में सफलता से हुआ है। आधुनिक समाज में वैयक्तिकता, अहं तथा स्वार्थ की अतिशयता के कारण सम्मिलित परिवार टूटते जा रहे हैं। नाते-रिश्तों में एकप्रकार का अलगाव, दुराव निर्माण हो रहा है। टूटन की प्रक्रिया गतिशील हो रही है। बढती महँगाई में परिवार के लिए स्त्रियों को नौकरी करना अनिवार्य हो रहा है। फलत: पति-पत्नी के नातों में परिवर्तन आ रहे हैं। यौन सम्बन्धों में स्वैराचार बढता जा रहा है। उक्त दमघोटु वातावरण का वास्तव चित्रण चन्दन की आत्मकथा के माध्यम से प्रस्तुत करके युगीन यथार्थ को सजीव बना दिया है।

महानगरीय जीवन

"भ्रमभंग" उपन्यास का केन्द्रिय स्थान महानगर बम्बई है। इस महानगरीय जीवन के विविध पहलुओं का अत्यंत सूक्ष्मता से प्रायोगिक शैली में आकर्षक वास्तव चित्राण प्रस्तुत किया है। इसप्रकार महानगरीय जीवन में आवास का प्रश्न जनसामान्य के सामने रौद्रस्प धारण करता है। सामान्यजन को अर्थार्जन के लिए कितने कष्ट उठाने पडते हैं और किसप्रकार परिवास में विघटन आ रहा है और किसप्रकार जीवन के मूल्य विघटित हो रहे हैं और किसप्रकार बढती महँगाई के कारण जनजीवन अध्वस्त हो रहा है आदि के स्थानीय वातावरण के चित्राण में देवेशाजी ने गहरे रंग भरे हैं।

आधुनिक काल में भौतिक सुख-सुविधाओं के कारण महानगरीय जीवन अस्वस्थ तथा बेचैन सा प्रतीत हो रहा है। वातावरण के प्रदुषाण के बीच जीवन की सुख और शांति क्षीण होती जा रही है। लेकिन उपन्यासकार देवेशाजी का बचपन पहाडी प्रदेश में बीत जाने के कारण उनके मन में प्रकृति प्रति बचपन से ही लगाव दिखाई देता है। "भ्रमभंग" उपन्यास में आलम्बन स्प में शुध्द प्रकृति के चित्र प्रस्तुत किए है। लेकिन उपन्यास की देशागत मर्यादा के कारण ऐसे बहुत कम चित्रा प्राप्त होते हैं, परन्तु नायक चन्दन की मन:स्थिति के विविध स्पों को प्रकट करने के लिए प्रकृति चित्राण को माध्यम के स्प में अपनाया है। नायक चन्दन को बारिश का मौसम, सागर किनारे सैर करना प्रिय लगता है। निष्कर्षत: देवेशाजी ने प्रकृति के सुन्दर और आकर्षक चित्रा बडी कलात्मकता के साथ "भ्रमभंग" में प्रस्तुत किए हैं।

"भ्रमभंग" उपन्यास में मध्यवर्ग के संयुक्त परिवार को केन्द्र में रखकर वह किसतरह बिखरता जाता है और परिणामस्वस्प विकृतियाँ किस-प्रकार फैलती जाती है, इसकी विस्तृत गाथा प्रस्तुत करना देवेशाजी का उद्देश्य रहा है।

"भ्रमभंग" का उक्त उद्देश्य देवेशाजी ने चन्दन-कथा की माध्यम से प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। "भ्रमभंग" में समकालीन जीवन के

ज्वलंत प्रश्नों को भी उपस्थित किया गया है | और उनके समाधान भी देवेश जी ने अपने जीवन-दर्शन के अनुसार सूचित किए हैं | जीवन में जो भी विकट परिस्थितियाँ आयें उसका डटकर सामना करना होगा | तभी जीवन में सफलता मिलती है | आत्मनिर्णय का क्षण ही मानव-मुक्ति की दशा में एक महत्त्व-पूर्ण कदम है | विपत्तियों से संघर्ष करते समय विद्रोही तथा आक्रमक वृत्ति होनी चाहिए | गलत को गलत कहने का साहस होना चाहिए | एक हाथ में ईट और दूसरे हाथ में कलम लेकर प्रगतिशील लेखकों को व्यवस्था-परिवर्तन के लिए प्रयास करना चाहिए | कम से कम समाज विषमता के विरुद्ध शिक्षितों में सही चेतना जागृत करने का काम साहित्यिक रचना कर सकती है |

देवेशजी का उपर्युक्त उद्देश्य "भ्रमभंग" उपन्यास में सफलता से व्यंजित हुआ है | "भ्रमभंग" में चन्दन अपनी विफलताओं में भी सफलता की कल्पना और कामना करता है और अंत में कर्मठता तथा पुरुषार्थ के बल पर वह सफल होता है | "भ्रमभंग" उपन्यास की नयी उपलब्धि है - विकास ही जीवन की प्रगति का रहस्य है | जीवन सफलता का यह सूत्र सदैव प्रेरणा देता रहेगा |

समग्रत: "भ्रमभंग" उद्देश्य की दृष्टि से एक नयी दृष्टि देनेवाला सफल उपन्यास है और यह एक नयी दृष्टि है मनुष्य की जीजीविषा वृत्ति |

"भ्रमभंग" उपन्यास की भाषा में शब्द-प्रयोग के विभिन्न रूप - तत्सम, तद्भव, विदेशी आदि प्रयुक्त हुए है | परिणामत: उपन्यास की भाषा में सहजता आयी हैं | भाषा में सुन्दरता लाने के लिए मुहावरों, कहावतों सूक्तियों आदि उपकरणों का भी कलात्मकता से प्रयोग किए गये हैं | भाषा-सौन्दर्य के साधन - विशेषण, रूपक, उपमान, प्रतीक, बिम्ब आदि का प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है |

कथ्य की नवीनता का सफल संप्रेषण करने के लिए देवेशजी ने मात्र शब्दों के विविध रूपों का नवनिर्माण ही नहीं किया बल्कि नये वाक्य-गठन का सूत्रापात भी किया | "भ्रमभंग" में महानगरीय जीवन की विस्तृत

विभीषिका के चित्राण के लिए प्राचीन परम्परागत वाक्य-विन्यास की शैली पर्याप्त नहीं लगी अत: वाक्यविन्यास में क्रांतिकारी परिवर्तन करके उसे एक नया अर्थबोध दिया | कहीं कर्ताविहीन वाक्य, कहीं छोटे छोटे वाक्य, कहीं अनिश्चित क्रमवाले वाक्य, कहीं क्रियाविहीन वाक्य तो कहीं अधुरे वाक्य तथा कहीं कहीं पात्रों की मन:स्थिति के अनुकूल वाक्यों का सार्थक और सशक्त प्रयोग देवेशजी ने "भ्रमभंग" उपन्यास में किया है | "भ्रमभंग" की भाषा में अधुनातन जीवन के तणावों को व्यक्त करने की क्षामता है |

भाषापर उनका जबर्दस्त अधिकार है | उन्होंने जहाँ और जैसा चाहा वैसा ही भाषा को गढा, सँवारा और एक नया रूप दिया है | पात्रों की मनोदशा को टूटन और बिखराव के अनुसार अलग अलग प्रकार के वाक्यों का प्रयोग करके देवेशजी ने महानगरीय परिवेश का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है | कुल मिलाकर देवेशजी की भाषा में सहजता, नाटकीयता, बिम्बात्मकता, लयात्मकता, स्वाभाविकता, संवेदनशीलता का चुटीलापन, पैनापन आदि गुणों का निर्वाह हुआ है | निष्कर्ष के रूप में देवेशजी की भाषा में कथ्य को प्रभावकारी ढंग से संप्रेषित करने की अद्भूत क्षामता है |

"भ्रमभंग" विशिष्ट शिल्प शैली में ढला उपन्यास है | देवेशजी ने परम्परागत औपन्यासिक शैली का अनुकरण न करके बिल्कुल नवीन रचना - विधान को अपनाया है |

"भ्रमभंग" उपन्यास प्रमुखत: आत्मकथात्मक शैली में लिखा होने पर भी उसके प्रस्तुतीकरण में देवेशजी ने अपनी प्रतिभा से प्रचलित विविध शैलियों का यथोचित समाहार करके एक नूतन शैली का सृजन किया है | यह शैली उनकी अपनी शैली बन गयी है | अत: इसे "देवेश शैली" कहने में किसी को आपत्ति नहीं होनी चाहिए |

आत्मकथात्मक शैली में लिखे गए इस उपन्यास के कथ्य को देखते हुए यह शैली सहज तथा उपयुक्त प्रतीत होती है | बीच बीच में पत्र शैली एंव संवाद शैली से कथा अत्यंत रोचक और प्रभावशाली बनी है | देवेशजी ने चन्दन के रूप में उपस्थित रहकर अपने जीवन चरित्र को ही अंकित किया है |

अत: संदर्भ, पात्र और परिवेश यथार्थ रूप में प्रकट हुए है। स्थूल घटनाओं का संयोजन कम हुआ है लेकिन अर्न्तव्दन्व्द का सूक्ष्मता से चित्राण है।

देवेशजी ने अपने बीती हुए अनुभूतियों को उपन्यास के विस्तृत केनवास पर चेतना-प्रवाह शैली के माध्यम से उतारा है। चन्दन का आत्मकथान कहीं जगहों पर एकालाप बन गया है। नाटकीयता देवेशजी की औपन्यासिक कला की विशेषाता है। इसतरह उपन्यास में आत्मकथा, जीवनी, रेखाचित्र, संस्मरण आदि विभिन्न विधाओं की शैलीगत विशेताएँ द्रष्टव्य हैं।

"भ्रमभंग" के प्रस्तुतीकरण में शिल्पविधान की नई संभावनाओं क का आविष्कार देवेशजी ने अपने अथाक परिश्रम, अभ्यास तथा प्रतिभा से करके शैली-शिल्प को नए आयाम प्रस्तुत किए है। इसप्रकार विविध शिल्प-शैलियों के संयोग और प्रयोग से देवेशजी ने "भ्रमभंग" उपन्यास का शिल्पगत सौन्दर्य बढा दिया है। औपन्यासिक प्रस्तुतीकरण शिल्प में मौलिक परिवर्तन उपस्थित किए। अपने अभिनव उपन्यास शिल्प से देवेशजी ने उपन्यास की शैली-क्षेत्रा में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

अनुसंधान की उपलब्धियाँ

अनुसंधान के प्रारम्भ में "भ्रमभंग" उपन्यास के संबंधा में जो प्रश्न हमारे सामने थो उन प्रश्नों के उत्तर निम्नलिखित हैं।

प्रश्न १ : क्या चन्दन की कथा देवेशजी की नीजी कथा है?

- "भ्रमभंग" के चन्दन की कथा उपन्यासकार देवेशजी की अपनी नीजि आत्मकथा है।

प्रश्न २ : चन्दन ने कौन कौन से भ्रम पाले थो?

- माँ की ममता, संयुक्त परिवार की उन्नति, प्रणयविवाह, शिक्षा तथा साहित्य जगत् के संदर्भ में चन्दन ने अपने जीवन में कुछ आशाएँ - अपेक्षाएँ, स्वप्न, भ्रम - मोह पाले थो। वे सब टूट जाते हैं।

प्रश्न ३ : क्या चन्दन का चरित्र युवा-पीढी के लिए प्रेरणादायी हैं?

- भ्रमों के भंग होनेपर भी चन्दन अपनी जीजिविषा वृत्ति के कारण अंत में जीवन में सफलता तथा स्वास्थ्य का अनुभाव करता है। अत: चन्दन का चरित्र युवा-पीढी के लिए प्रेरणादायी है।

प्रश्न ४ : देवेशजी की जीवन-दृष्टि क्या है?

- उपन्यासकार देवेशजी का जीवन विषयक दृष्टिकोण मानवतावादी है, आस्थावादी तथा आशावादी है।

प्रश्न ५ : "भ्रमभंग" की भाषा-शैली में कौनसी नवीनता है?

- "भ्रमभंग" की शैली प्रमुखत: आत्मकथात्मक होते हुए भी देवेशजी की प्रयोगधर्मी प्रतिभा का स्पर्श पाकर वह एक नूतन समन्वित "देवेश शैली" बन पडी है।

अनुसंधान की नई दिशा

निम्न दिशा से "भ्रमभंग" उपन्यास का अनुसंधान किया जा सकेगा।

१. "यथार्थवादी उपन्यासों की परम्परा में भ्रमभंग का स्थान।"